डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप
सत्र 11, पाप का बाइबिल विवरण जारी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11 है, पाप का बाइबिल विवरण जारी है।

हम पाप के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, जॉन महोनी के लेखन के रूप में अधिक परिचयात्मक सामग्रियों के साथ काम करते हैं।

बिंदु संख्या 5, पाप में एक साथ कमीशन, चूक और अपूर्णता शामिल है। पाप को आसानी से किए गए कार्य, अधूरे छोड़े गए कार्य या गलत इरादे से किए गए कार्य के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जब हम पाप को कमीशन, किए गए कार्य के रूप में सोचते हैं, तो हम गलत काम करने, कहने या सोचने की बात कर रहे होते हैं।

उदाहरण के लिए, जॉन लिखते हैं, जब मैं छोटा था, मैंने एक खिड़की तोड़ दी, अपने पिता से इस बारे में झूठ बोला, और इसके लिए अपने भाई को दोषी ठहराया। झूठ बोलना पाप था। मैंने जानबूझकर और स्वतंत्र रूप से एक नैतिक संहिता तोड़ी।

दूसरी ओर, चूक के रूप में पाप, सही काम न करना, कहना या सोचना नहीं है। अपने भाई को दोष देना और सच न बताना भी नैतिक दोष है। इसके अलावा, अपूर्णता गलत काम करने, कहने या सोचने से बचना है, बल्कि गलत इरादे या रवैये के साथ सही काम करना, कहना या सोचना है।

अपने निजी जीवन से टूटी खिड़की की घटना का उपयोग करते हुए, अगर मैंने अपने पिता को सच बताया होता क्योंकि मैं परिणामों से बचना चाहता था, तो मैं सही तरीके से काम करता, लेकिन बिना किसी अच्छे इरादे के, और इसलिए अपूर्ण रूप से। सभी नैतिक कार्यों का मूल्यांकन भगवान के पवित्र चरित्र के मानक द्वारा किया जाता है, जो उनके नैतिक उपदेशों में व्यक्त किया जाता है। स्कॉटिश प्यूरिटन जॉन कैलहौन ने नैतिक कानून को इस प्रकार परिभाषित किया, उद्धरण, भगवान की घोषित इच्छा, मानव जाति को वह करने के लिए निर्देशित और बाध्य करती है जो उसे प्रसन्न करता है और उससे दूर रहना जो उसे नापसंद करता है, उद्धरण बंद करें।

जॉन कैलहौन, कानून और सुसमाचार पर एक ग्रंथ। दस आज्ञाओं को आम तौर पर भगवान के नैतिक कानून की प्रकाशित अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। झूठ बोलना, चोरी करना, हत्या करना, व्यभिचार करना और प्रभु का अनादर करना प्रत्यक्ष कार्य हैं।

इन्हें तोड़ना उच्चतम नैतिक मानक के विरुद्ध अपराध करने के समान है। दस मूलभूत संहिताओं में से आठ को विशिष्ट नैतिक सीमाओं को चिह्नित करने के लिए नकारात्मक रूप से कहा गया है। लेकिन शायद दस आज्ञाएँ भी नैतिक मार्गदर्शक होने के लिए अभिप्रेत थीं।

मैं शायद नहीं कहूंगा, मैं कहूंगा कि वे थे। उदाहरण के लिए, हत्या के विरुद्ध निषेध में मानव जीवन की पवित्रता का सिद्धांत भी शामिल है। इस प्रकार, मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं, उसे करने में विफल होना भी एक पाप है और यह चूक और अपूर्णता की श्रेणी में आता है।

प्रत्येक पाप, अलग-अलग डिग्री में, एक साथ कमीशन, चूक और अपूर्णता को शामिल करता है। व्यवस्था के इस अनुप्रयोग के दो कारण स्पष्ट हैं। एक वास्तव में चौथे सब्त-पालन की आज्ञा और पाँचवें माता-पिता के अधिकार का सम्मान करने की आज्ञाओं को जिस तरह से कहा गया है, उससे आता है।

वे स्वभाव से सकारात्मक हैं। यानी, उनका पालन न करने पर उनका उल्लंघन होता है। इन आदेशों का पालन न करना चूक माना जाता है।

परिणामस्वरूप, सब्त का पालन न करना भी एक प्रत्यक्ष कार्य के रूप में व्यक्त किया जाता है। सब्त का सम्मान न करना कुछ कार्यों, शब्दों या विचारों को दर्शाता है। इसके अलावा, दिल से अनुपालन में कोई कमी, अपने पूरे दिल से अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करना, सब्त को अपूर्ण रूप से पालन करना है।

दूसरा कारण यीशु द्वारा दी गई आज्ञाओं का सारांश है। मत्ती 22:36-40, मरकुस 12:29-31। प्रेम एक सकारात्मक आज्ञा है।

पहली चार आज्ञाओं के बारे में आज्ञाकारिता के लिए यीशु ने जो मानक तय किया है, वह है परमेश्वर से प्रेम करना, उद्धरण, अपने पूरे दिल से और अपनी पूरी आत्मा से और अपने पूरे दिमाग से, उद्धरण बंद करें। इस प्रकार, क्या हमने कभी परमेश्वर की नैतिक आवश्यकताओं का पूरी तरह से पालन किया है? यीशु इसमें उद्देश्यों और दृष्टिकोणों को भी शामिल करते हैं। परिणामस्वरूप, नौवीं आज्ञा के मामले में, झूठ नहीं बोलना, क्या हम हमेशा दूसरों और खुद के प्रति सच्चे होते हैं? क्या हमने अपनी पूरी क्षमता से परमेश्वर का आदर किया है, आज्ञाएँ 1-4? जब OMG हमारी ईसाई संस्कृति में भी आम है, तो क्या हम उसके नाम और व्यक्तित्व का पूरी तरह से सम्मान कर रहे हैं? पाप में हमारा स्वभाव, स्वभाव और अवज्ञा के हमारे कार्य शामिल हैं।

प्रत्येक पापपूर्ण कार्य या अकर्म के भीतर कुछ ऐसे दृष्टिकोण और उद्देश्य होते हैं जो पापपूर्ण होते हैं। चोरी के मूल में लालच होता है। एलीशा के सेवक गेहजी ने अपने दिल के लालच का पालन करते हुए नामान से झूठ बोला और पैसे और कपड़े लिए जिन्हें एलीशा ने पहले लेने से मना कर दिया था।

वापस लौटने पर, उसे एलीशा के एक भयावह सवाल का सामना करना पड़ा। तुम कहाँ थे, गेहजी? तुम्हें किसी भविष्यवक्ता के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। तुम्हें ईश्वर के सच्चे भविष्यवक्ता के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।

2 राजा 5:25. हत्या घृणा की अभिव्यक्ति है। यूसुफ़ को लगभग मार दिया गया था और उसे गुलामी में बेच दिया गया था क्योंकि उसके भाई उससे नफरत करते थे। उत्पत्ति 37.4 और 5. यीशु स्पष्ट रूप से रवैये को कार्रवाई से जोड़ता है।

मत्ती 5:21.22. यूहन्ना का पहला पत्र कहता है कि जो अपने भाई से घृणा करता है, वह अंधकार में घूमता है। 2:11. वह हत्यारा है। 1 यूहन्ना 3:15. और झूठा है।

4:20 . दिल में वासना न केवल व्यभिचार और यौन अनैतिकता की ओर ले जा सकती है, बल्कि इसे व्यभिचार के कृत्य के समान ही गंभीरता से लिया जाता है। मत्ती 5:28. आयत 29 और 30 पर ध्यान दें जिसमें यीशु वासना से निपटने के लिए कट्टरपंथी कदम उठाने का आह्वान करता है। मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि लालच को प्रतिबंधित करने वाली 10वीं आज्ञा सीधे दिल पर लागू होती है, साथ ही साथ दृष्टिकोण और उद्देश्यों पर भी।

अपने पड़ोसी की पत्नी और उसकी संपत्ति की इच्छा करना पड़ोसी और निश्चित रूप से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करना है। पाप में अपराध और भ्रष्टाचार शामिल है। आम तौर पर, बुराई को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है।

एक है प्राकृतिक बुराई, आपदाएँ और बीमारियाँ जो व्यक्तिगत पसंद से जुड़ी नहीं हैं। विनाशकारी घटनाओं को बुराई इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके अक्सर विनाशकारी प्रभाव होते हैं। प्राकृतिक बुराई सीधे तौर पर मानवीय पाप से उत्पन्न नहीं होती बल्कि अधिक सामान्य अर्थों में इसके परिणामस्वरूप होती है।

रोमियों 8:19-22. पतन अंततः प्राकृतिक बुराई के पीछे है। फिर भी, सामान्य अनुग्रह के संयम के माध्यम से, परमेश्वर के उद्देश्य अभी भी प्राकृतिक बुराई द्वारा पूरे किए जाते हैं। यशायाह 45.7. जो प्रकाश बनाता है और अंधकार पैदा करता है, कल्याण करता है, और विपत्ति पैदा करता है, उसे किंग जेम्स संस्करण में बुराई के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मैं ही वह भगवान हूँ जो ये सब करता है। बुराई का दूसरा रूप नैतिक बुराई है। तो प्राकृतिक बुराई और नैतिक बुराई।

हम बुराई के दो रूपों को अलग करने के लिए बुरे, प्राकृतिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने वाले और गलत, टूटे हुए नैतिक कानून पर ध्यान केंद्रित करने वाले शब्दों का उपयोग करते हैं। नैतिक बुराई किसी व्यक्ति द्वारा जानबूझकर किए गए कार्य द्वारा एक विशिष्ट नैतिक कानून का उल्लंघन है। यह कार्य हमें ईश्वर के सामने दोषी बनाता है।

अपराधबोध टूटे हुए कानून का साथी है। सुनना ही वह कारण है जिससे अपराधबोध सार्वभौमिक है। बगीचे में आदम का कृत्य परमेश्वर के समक्ष सभी अपराधों का गठन करता है।

अपराधबोध के दो पहलू हैं। एक है व्यक्तिगत जिम्मेदारी। परंपरागत रूप से, धर्मशास्त्री इस दोष-योग्यता को संभावित अपराधबोध कहते हैं।

यह वह अपराध है जो किसी वास्तविक पापपूर्ण कार्य के बाद होता है, जो दोषी भावनाओं में परिलक्षित होता है। अपराध का दूसरा पहलू दंड के लिए उत्तरदायित्व है, जिसे वास्तविक अपराध कहा जाता है। सभी पाप, उद्धरण, हमें ईश्वर के सामने दोषी बनाते हैं।

ऐसा नहीं है कि हम विद्रोह कर सकते हैं या अविश्वास कर सकते हैं या अभिमानी या आत्म-केंद्रित हो सकते हैं, बस थोड़ा सा, वास्तव में इतना कम कि हम अपराधबोध के शिकार हो जाएं, क्योंकि अपराधबोध गलत दिशा में मुड़ने से आता है, चाहे अगला कदम कितना भी छोटा क्यों न हो। मैथ्यू 5:19, जेम्स 2:10, और यह मार्गुराइट शूस्टर के लेखन से है, द फॉल एंड सिन, व्हाट वी हैव बिकम एज सिनर्स, 2004। मैं अपने स्वयं के नोट्स से यह जोड़ सकता हूं कि पाप में अपराधबोध और प्रदूषण शामिल हैं।

तो, मैं जॉन महोनी द्वारा अपराधबोध के बारे में कही गई बातों को प्रदूषण या पारंपरिक रूप से अपराधबोध और भ्रष्टाचार के साथ जोड़ रहा हूँ। प्रदूषण इसे कहने का एक आधुनिक तरीका है। इन दोनों को एक साथ देखना अच्छा है।

पाप से निपटने में ये दोनों ही बहुत ज़रूरी हैं। और पाप के अपराध का मतलब है, जैसा कि उसने अभी-अभी हमें बताया है, परमेश्वर के सामने हमारा अपराध, उसके खिलाफ़ पाप करना और उसकी सज़ा के हकदार होना, हमारे पाप या आदम के पाप की वजह से उसका क्रोध झेलना। हम मूल पाप और वास्तविक पाप के बीच अंतर करते हैं।

मूल पाप आदम का पाप है, जिसे मानव जाति पर आरोपित किया गया है, जैसा कि हम रोमियों 5:12 और उसके बाद देखेंगे। वास्तविक पाप वे पाप हैं जो हम करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि यह रोमियों 5:12 से 19 या 21 है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कितना आगे ले जाते हैं, जो वास्तविक पाप के संदर्भ में पतन के बारे में उत्पत्ति 3 की बाइबिल व्याख्या है।

लेकिन, रोमियों में पॉल की थीसिस के विकास में, मूल पाप को अध्याय 5 में वापस रखा गया है, और सुसमाचार, 1:16 और 17, 1:18 से 3:20 तक समझाने के अपने उद्देश्य की घोषणा करने के बाद, वह मूल पाप से नहीं, बल्कि वास्तविक पाप से निपटता है। इसलिए, हमारे वास्तविक पाप और मूल पाप दोनों हमें एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर के सामने दोषी बनाते हैं। इसलिए, अपराध का अर्थ है दोष-योग्यता, अगर आप चाहें तो, भ्रष्टाचार या प्रदूषण से अलग, जो एक नैतिक श्रेणी है।

अपराधबोध का अर्थ है कि चाहे हम इसे महसूस करें या न करें, चाहे हम इसे करें या न करें, हम पवित्र परमेश्वर के सामने मुसीबत में हैं। हम उसके सामने दोषी हैं, रोमियों 3:19 और 20। अब, हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ भी कहती है, वह उन लोगों से कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं ताकि हर मुँह बंद किया जा सके, और पूरी दुनिया परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हो सके।

क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है। इसमें दोष या अपराधी शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, लेकिन इसकी अवधारणा बहुत स्पष्ट है। इसी तरह, रोमियों 1:18 में परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताया

गया है जो स्वर्ग से लोगों की सारी अभक्ति और अधर्म के विरुद्ध प्रकट होता है, जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं।

अपराधबोध का अर्थ है कि हम परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी, दोषी और दोष के पात्र हैं, जो सही और गलत को परिभाषित करता है, जो पवित्रता और न्याय के अपने चरित्र पर आधारित है। इफिसियों 2:3, पौलुस मनुष्यों के बारे में बात करता है कि वे क्रोध के बच्चे हैं, जैसे कि बाकी लोग। स्वभाव से, वे क्रोध के बच्चे हैं, जैसे कि बाकी मानव जाति।

बिल्कुल वैसा ही जैसा ESV में लिखा है, और हम स्वभाव से, यानी जन्म से, क्रोध की संतान थे, यानी वे लोग जो बाकी मानवजाति की तरह परमेश्वर के क्रोध के पात्र हैं, ESV। हम स्वभाव से, क्रोध की वस्तुएँ थे, स्वभाव से, जन्म से, ईश्वरीय न्याय पाने के योग्य थे।

यह एक हिब्रू मुहावरा है, उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 12:5, जहाँ वह मृत्यु का पुत्र है, इसका मतलब है कि वह मरने के योग्य है। क्रोध के बच्चों का मतलब है बच्चे, मनुष्य, जो परमेश्वर के क्रोध के योग्य हैं । इसलिए, हम अपराध बोध को अलग करते हैं, और वैसे, इसे अपराध बोध से अलग किया जाना चाहिए।

किसी के मन में झूठी अपराध भावनाएँ हो सकती हैं, आप किसी ऐसी चीज़ के लिए दोषी महसूस कर सकते हैं जिसके लिए आप दोषी नहीं हैं, या आप किसी चीज़ के लिए दोषी हो सकते हैं और आपके मन में कोई अपराध भावना नहीं है। हम उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम एक पवित्र परमेश्वर के सामने वास्तविक, वस्तुनिष्ठ निंदा के बारे में बात कर रहे हैं।

प्रदूषण, पारंपरिक शब्द भ्रष्टाचार, का अर्थ है कि हम न केवल ईश्वर के सामने दोषी हैं, बल्कि हम स्वयं पाप से भ्रष्ट हैं। तो, एक कानूनी आयाम है, अपराधबोध, और एक नैतिक आयाम है। हम अपवित्र हैं, हम भ्रष्ट हैं।

प्रदूषण एक अच्छा शब्द है, जब तक आप इसे दिखावे के तौर पर नहीं देखते। यहाँ जिस प्रदूषण की बात की जा रही है, वह चेकोस्लोवाकियाई शहर जैसा है, जहाँ पुराने साम्यवाद के तहत प्रदूषण नियंत्रण लागू नहीं था, जिसकी तस्वीरें मैंने नेशनल जियोग्राफ़िक में देखी थीं। उस शहर में हर चीज़ काली थी।

मैं काले लोगों की त्वचा के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, जो दुनिया की दूसरी त्वचा की तरह ही खूबसूरत त्वचा है। मैं पेड़ों पर गंदगी और प्रदूषण की बात कर रहा हूँ, जो काले थे, हरे पेड़, घर और इंसान, जो कोकेशियान थे, जिनकी त्वचा प्रदूषण के कारण काली हो गई थी। साम्यवाद की अपने लोगों के प्रति देखभाल की कमी का यह एक पाठ्यपुस्तकीय प्रदर्शन है।

हम इसी प्रदूषण की बात कर रहे हैं। यह कोई छोटा-मोटा आवरण नहीं है जिसे आप खुरच कर हटा सकते हैं, बल्कि यह मानव के मूल में मौजूद भ्रष्टाचार है। हम पाप करते हैं क्योंकि हम पापी हैं।

उत्पत्ति 6:5 में कहा गया है कि मनुष्य का हर विचार हमेशा बुरा ही था। हाय रे! गलातियों 5:19-21 पापी स्वभाव के कर्मों, शरीर के कर्मों के बारे में बताता है।

तो, महत्वपूर्ण अंतर। अपराध और भ्रष्टाचार, या अपराध और प्रदूषण। अपराध एक कानूनी श्रेणी है।

भ्रष्टाचार और प्रदूषण नैतिक श्रेणियां हैं। इनमें से एक हमें हमारे निर्माता के साथ विवाद में डालता है और हम उसके साथ परेशानी में पड़ जाते हैं। हम उसके सामने निंदित हो जाते हैं।

यूहन्ना 3-36, परमेश्वर का क्रोध बचाए न गए लोगों पर बना रहता है। भ्रष्टाचार, प्रदूषण, हम वास्तव में पाप करते हैं क्योंकि हम अपवित्र हैं। हमारी जीभ अपवित्र है, हमारे मन भ्रष्ट और अपवित्र हैं, और इसलिए हमारे कार्य भी बुरे हैं।

महोनी के अच्छे व्याख्यान नोट्स के साथ आगे बढ़ते हुए, पाप बाइबल के परमेश्वर और उसके धार्मिक चरित्र के लिए एक व्यक्तिगत अपमान है। मैंने कुछ लोगों को देखा है जो इस धारणा को पसंद नहीं करते हैं, लेकिन यह एक बहुत ही बाइबलीय धारणा है। यशायाह का पाप तब स्पष्ट हो जाता है जब वह परमेश्वर की पवित्रता का सामना करता है, यशायाह 6. मैं अशुद्ध होठों वाला व्यक्ति हूँ, और मुझे इस बात में दिलचस्पी है कि वह किस क्षेत्र को चुनता है। मैं अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ , क्योंकि मेरी आँखों ने महिमा के प्रभु को देखा है।

मसीह की उपस्थिति में पतरस के लिए भी यही सच था। आश्चर्यजनक रूप से, मछलियों के एक बड़े जत्थे पर, जिसका समय और मात्रा अलौकिक है, पतरस कहता है, प्रभु, मुझसे दूर हो जाओ, मैं एक पापी आदमी हूँ। प्रभु, आपकी शक्ति का क्या प्रदर्शन है, मैं अब आपके सामने झुकता हूँ, लेकिन अब, नहीं, इसके पीछे क्या है? इसके पीछे पवित्रता एक अलगाव की भावना के रूप में है; परंपरागत रूप से, धर्मशास्त्रियों को बाइबल के नेतृत्व का अनुसरण करते हुए पवित्रता को ईश्वर की हमसे अलगाव के रूप में खोजना पड़ता है, और यही उसकी नैतिक शुद्धता है, ठीक है, इसके पीछे यही हो सकता है, और यह तथ्य भी कि ईश्वर एक साथ अपने सभी गुणों में से एक है।

और इसलिए, शक्ति के प्रदर्शन ने पतरस को अपने पाप स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया, शायद यीशु के शब्दों पर अविश्वास करने के लिए भी। और आप जानते हैं, वह, मैं एक पेशेवर मछुआरा हूँ। मैंने यह कितने सालों से किया है? और आप बस जा रहे हैं, शायद उसने ऐसा सोचा और यह नहीं कहा, लेकिन धमाका, जाल भर गए। वह जानता है कि यहाँ क्या हो रहा है।

जिसने कहा, नाव के दूसरी तरफ अपने जाल डालो, वह परमेश्वर के अधिकार से बोला। और पतरस कांप उठा, जो वास्तव में एक बुरी प्रतिक्रिया भी नहीं है। परमेश्वर के चरित्र और व्यवस्था के प्रकाश के अलावा पाप को मापा नहीं जा सकता।

जेम्स ऑर का पाप आज की समस्या है; 19:10 में, एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री जिसने बहुत अच्छा काम किया, ने इस तरह लिखा; ऑर ने लिखा कि पाप, दूसरे शब्दों में, केवल एक नैतिक नहीं है, बल्कि यह एक धार्मिक अवधारणा है। पाप ईश्वर के विरुद्ध एक अपराध है, सृष्टिकर्ता की इच्छा

के लिए प्राणी की इच्छा का प्रतिस्थापन, और ईश्वर से प्राणी की इच्छा का विद्रोह। यह ईश्वर के साथ यह संबंध है जो गलत कार्य को पाप के रूप में उसका विशिष्ट चरित्र देता है।

भजन 51:4, इसलिए यह केवल परमेश्वर के चरित्र के प्रकाश में पवित्र है, जो मसीह की शिक्षा में पिता के प्रेम के पहलू में परिपूर्ण है, और मनुष्य के लिए परमेश्वर के अंत के बारे में है, यह केवल उन दृष्टिकोणों से है कि पापपूर्ण कार्यों की बुरी गुणवत्ता और पूर्ण विशालता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मुझे नहीं लगता कि हम अपने पापपूर्ण कार्यों की पूरी विशालता को समझते हैं। शुक्र है, परमेश्वर समझता है, और वह अभी भी हमसे प्यार करता है, और वह अभी भी अनुग्रह में है, हमारे प्रतिस्थापन के रूप में मसीह को प्रदान करता है।

इसलिए, पाप बहुत बड़ा है और मानवीय चित्रण से परे है। आमीन। हम गलत कामों, बाल यौन शोषण, मादक द्रव्यों के सेवन, हिंसा के मूर्खतापूर्ण और अनियंत्रित कृत्यों और कामुकता का न्याय केवल अपने सीमित संदर्भ से ही कर सकते हैं।

वे हमें कितने गलत लगते हैं, और उनके परिणाम कितने विनाशकारी हो सकते हैं। हमारे पाप की गलतता का परमेश्वर का आकलन उसकी अपनी पवित्रता की महिमा के संबंध में किया जाता है। धार्मिकता नैतिक ईमानदारी का एक मानक है जिसकी अपेक्षा परमेश्वर सभी लोगों से करता है।

भजन 96:10 और 13, यिर्मयाह 9:24, यह परमेश्वर की पवित्रता है जो उसके नैतिक प्राणियों के साथ उसके रिश्ते पर लागू होती है। इसलिए, धार्मिकता वह नैतिक माप है जिसका उपयोग वह हमारे सभी कार्यों, शब्दों और विचारों का मूल्यांकन करने के लिए करता है। और फिर, हम यशायाह के साथ कह सकते हैं कि हम असफल हो गए हैं।

अरे यार, यह पाप के सिद्धांत का अध्ययन है, यह अनुग्रह की आवश्यकता की निरंतर याद दिलाता है। राल्फ वेनिंग, पाप पर अपने क्लासिक काम में, एक प्यूरिटन थे। प्लेग ऑफ प्लेग्स में पाप का संबंध ईश्वर की पवित्रता से बताया गया है। इसके विपरीत, जैसा कि ईश्वर पवित्र है, पूरी तरह से पवित्र है, केवल पवित्र है, पूरी तरह से पवित्र है, और हमेशा पवित्र है, इसलिए पाप पापपूर्ण है, सभी पापपूर्ण है, केवल पापपूर्ण है, पूरी तरह से पापपूर्ण है, और हमेशा पापपूर्ण है।

उत्पत्ति 6:5, उद्धरण समाप्त। मूलतः, क्योंकि यह परमेश्वर के विरुद्ध है, पाप एक कट्टरपंथी बुराई है। टेड पीटर की शक्तिशाली पुस्तक, इसके कुछ भाग जिन्हें पढ़कर आप खुश होंगे, कुछ भाग ऐसे होंगे जिन्हें पढ़कर आप खुश नहीं होंगे।

पाप, आत्मा और समाज में कट्टरपंथी बुराई, 1994. मजबूत, दवा नहीं, बल्कि बीमारी। क्योंकि पाप भगवान के खिलाफ पाप है, यह कट्टरपंथी बुराई है।

पाप की दुष्टता की पराकाष्ठा तब उजागर होती है जब इसे संपूर्ण बाइबिल प्रकाशन के प्रकाश में देखा जाता है। मापों की एक श्रृंखला हमें पाप की विकृति को देखने में मदद करेगी। सबसे पहले, जैसा कि हमने देखा है, पाप को उस व्यक्ति की पवित्रता से मापा जा सकता है जिससे हमने विद्रोह किया है।

यह सृष्टिकर्ता का उल्लंघन करता है। पाप सृष्टिकर्ता का उल्लंघन करता है। इसलिए लोग इस भाषा को पसंद नहीं करते।

और मैं उन्हें दोष नहीं देता। और यह निश्चित रूप से मानवरूपी भाषा है, लेकिन... पाप परमेश्वर के नैतिक चरित्र के बिलकुल विपरीत है। इसके बाद, इसे उस ऊँचाई से मापा जाता है जहाँ से हम गिरे हैं, मसीह के पास जो पूर्ण धार्मिकता और परमेश्वर का पूर्ण आनंद था, साथ ही साथ हम एक जाति के रूप में कितनी गहराई तक पहुँच गए हैं।

पिता हमें छुड़ाने के लिए कितनी दूर तक गए। यह क्रूस पर सूर्य का उल्लंघन करता है।

जब हम अपने अवगुणों के नजरिए से देखें तो उनकी कृपा सबसे अद्भुत है। इसके साथ ही, चौथा, पाप को उस उद्देश्य से मापा जा सकता है जिससे हम बने हैं। यह हमारे अंदर ईश्वर की छवि का उल्लंघन करता है।

मसीह छवि के वाहक हैं, लेकिन हम भी हैं। उस कार्य के संबंध में हम क्या कर रहे हैं? हम इससे कितने दूर आ गए हैं? मुझे लगा कि यह आदमी विद्वान है। अब वह एक उपदेशक की तरह लग रहा है।

वह यहाँ बार-बार मेडलिन गया है। पाँचवाँ, हम पाप के अंधकार को उस गंतव्य से माप सकते हैं जिसकी ओर पतित मानवता सही मायने में जा रही है। प्रकाशितवाक्य 20:11 से 15, जिसे आग की झील कहा जाता है।

अंत में, मिशनरी दृष्टिकोण से पाप का माप अधूरा कार्य है जिसके लिए वह अपने प्रतिनिधियों को बुलाता है। हमारा मिशन एक अंधेरी दुनिया में प्रकाश-वाहक बनना है, 7 बिलियन से अधिक व्यक्तियों की दुनिया, जिनमें से अधिकांश पाप के कारण हर दिन पूर्ण आध्यात्मिक अंधकार में रहते हैं। हम 7 बिलियन से अधिक लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने के कितने करीब हैं जो अब इस ग्रह को साझा करते हैं? नरक पर कई पुस्तकों को लिखने और संपादित करने के बाद और फिर खोए हुए लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने की आवश्यकता पर एक पुस्तक जिसका नाम है विश्वास सुनने से आता है, समावेशवाद का जवाब, मॉर्गन के साथ संपादित पुस्तक, निश्चित रूप से, समावेशवाद का विरोध करती है, यह दृष्टिकोण कि यद्यपि यीशु एकमात्र उद्धारकर्ता है, आप इस जीवन में सुसमाचार पर विश्वास किए बिना भी उसके द्वारा बचाए जा सकते हैं।

यह गलत है। सत्य को जानना चाहे जितना भी कठिन क्यों न हो, बहिष्कारवाद सही है। यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है, और इस जीवन में सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए।

उसके बाद, मैंने ट्रांसवर्ल्ड रेडियो का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व शुरू किया, जो हर दिन दुनिया भर में ज़्यादातर जगहों पर सच्चा सुसमाचार प्रसारित करता है। मैं इसे इस तरह से कहूँगा। मुझे कुछ करना था क्योंकि लोगों को सुसमाचार सुनने की ज़रूरत है। पाप ईश्वर की रचना में एक दुष्ट तत्व है।

कष्ट के रूप में समझा बोनी , अच्छाई का अभाव। तदनुसार, अच्छाई परमेश्वर की सृष्टि की विशेषता है। उत्पत्ति 1:4, 10, 12, 18, 21, 25, और 31।

ऑगस्टीन के लिए, पाप उस अच्छाई का निषेध है। पाप वास्तव में मौजूद नहीं है, लेकिन अच्छाई की अनुपस्थिति में प्रकट होता है। नतीजतन, पाप निर्मित दुनिया की विशेषता नहीं है।

अपनी रचना, द सिटी ऑफ़ गॉड में, वे अपने अर्थ को मौन और अंधकार के साथ दर्शाते हैं। वे लिखते हैं, उद्धरण, मौन और अंधकार हमारे लिए बोधगम्य हो सकते हैं, और यह सच हो सकता है कि मौन को कानों के माध्यम से और अंधकार को आँखों के माध्यम से देखा जाता है। फिर भी मौन और अंधकार बोध नहीं हैं, प्रजातियाँ नहीं हैं, और अनुपस्थिति, लेकिन वे प्रजातियाँ नहीं हैं, वे बोध नहीं हैं, प्रजातियाँ हैं, लेकिन किसी भी बोध की अनुपस्थिति, प्रोवेटियो हैं ।

इस प्रकार, पाप ईश्वर द्वारा बनाया गया पदार्थ नहीं है, बल्कि उस अच्छाई के भीतर एक अनुपस्थिति है जिसे उसने बनाया है। ऑगस्टीन का सिटी ऑफ़ गॉड, सेंट ऑगस्टीन के लेखन, चर्च के पिता, 1952, अध्याय 12, खंड 7। इसके अलावा, पाप उन प्राणियों द्वारा किए गए स्वैच्छिक चुनावों के माध्यम से उत्पन्न हुआ जिन्हें ईश्वर ने बनाया था। सृष्टि में पाप के प्रकट होने का एकमात्र मार्ग स्वतंत्र चुनाव का खुला द्वार है।

परिणामस्वरूप, पाप परजीवी है, एक नकारात्मक गुण जिसका सृजित संसार में कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है, लेकिन यह ईश्वर द्वारा स्थापित नैतिक संरचनाओं को हड़प लेता है। सद्गुणों के समान मामले में, परजीवी को जीवित रहने के लिए एक मेज़बान की आवश्यकता होती है। उसी तरह, पाप एक नैतिक वायरस है, और केवल ईश्वर के अच्छे उद्देश्यों के संदर्भ में ही मौजूद है।

महोनी का काम मर्मज्ञ है, है न? यह खोजपूर्ण है। यह हमें सोचने के लिए बहुत कुछ देता है। पाप दुनिया के सामने निर्माता की छवि बनाने में विफलता है।

स्वर्ग और पृथ्वी निरंतर परमेश्वर की महिमा का प्रदर्शन कर रहे हैं। भजन 19:1 से 6। मनुष्यजाति परमेश्वर की सांसारिक रचना में सर्वोच्च है, और त्रिएक परमेश्वर की ख्याति फैलाने की जिम्मेदारी साझा करती है। हम अपने महान परमेश्वर के चमत्कारों की घोषणा करने में पूरी प्रकृति के साथ शामिल होते हैं।

हम उस व्यक्ति की छवि धारण करते हैं जिसने हमें बनाया है, और साझा छवि के कारण, हमें सृजित व्यवस्था पर प्रभुत्व दिया गया है। गेरहार्ड वॉन राड ने देखा कि यह महान कार्य इस महान कार्य के बारे में बताता है। जिस तरह शक्तिशाली सांसारिक राजा, प्रभुत्व के अपने दावे को दर्शाने के लिए, अपने साम्राज्य के उन प्रांतों में अपनी एक छवि स्थापित करते हैं जहाँ वे व्यक्तिगत रूप से प्रकट नहीं होते हैं, उसी तरह मनुष्य को पृथ्वी पर ईश्वर की छवि में, ईश्वर के संप्रभु प्रतीक के रूप में रखा गया है।

वह वास्तव में केवल ईश्वर का प्रतिनिधि है, जिसे पृथ्वी पर प्रभुत्व के लिए ईश्वर के दावे को बनाए रखने और लागू करने के लिए बुलाया गया है। गेरहार्ड वॉन रेड की उत्पत्ति पर टिप्पणी। एक इंजीलवादी के रूप में, मैं उस टिप्पणी में शामिल उनकी लिखी हर बात का समर्थन नहीं करूंगा,

लेकिन वह एक तेज दिमाग वाले व्यक्ति थे और पुराने नियम के अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में एक नेता थे।

हालाँकि यह इंजीलवादी नहीं है। सृष्टि से पहले ईश्वर की कल्पना करने की मानव जाति की भूमिका आदम के पतन से बुरी तरह से बाधित हुई। सबसे पहले, पतन ने पूरी सृष्टि को ईश्वर के मूल नैतिक डिजाइन से अलग कर दिया।

रोमियों 8:20 क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के अधीन की गई थी। परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वालों का मूल उद्देश्य दयालु शासक बनना था, न कि दुर्भावनापूर्ण अत्याचारी। सृष्टि पर पारिस्थितिक रूप से प्रभाव आश्चर्यजनक है।

लियोन मॉरिस ने कहा कि इसमें वह उद्देश्य नहीं है जिसके लिए इसे बनाया गया था; इसका कोई उद्देश्य नहीं है। निरंतर आनंद का स्रोत होने के बजाय, सृष्टि हमारे साथ असंगत है। पॉल ने परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की प्रत्याशा में सृष्टि को जकड़ने वाली प्रत्याशा का वर्णन किया है।

पद्य 19. सी.एस. लुईस ने अपनी श्रृंखला, द क्रॉनिकल्स ऑफ़ नार्निया में इसे खूबसूरती से चित्रित किया है, जिसमें असलान के साथ मानव राजाओं की वापसी नार्निया को पुनर्स्थापित करती है। आदम के पतन से छवि के भ्रष्ट होने से सामाजिक पतन भी हुआ।

उत्पत्ति 4 से 11 में उभरती हुई मानव संस्कृतियों के तीन चक्रों ने पतित दुनिया की हिंसा और अन्याय को उजागर किया। औजार बनाने और जानवरों को पालतू बनाने में प्रगति स्वार्थी गतिविधियों में बदल गई है। पॉल ज्यूएट ने कहा, उद्धरण, कि धातुओं के उपयोग के तुरंत बाद न केवल हत्याओं में वृद्धि हुई , बल्कि वह शहर जो एक नए बसे हुए जीवन का संकेत था, उत्पत्ति 4:17, जल्द ही एक टावर वाला शहर बन गया जो मानव महत्वाकांक्षा को खुद से परे ले जाने का प्रतीक है।

उद्धरण बंद करें। पॉल ज्यूएट और मार्गुराइट शूस्टर, उनके शिष्य। हम कौन हैं, मानव के रूप में हमारी गरिमा, 1996।

बहाल छवि-धारकों के रूप में विश्वासियों का कार्य अभी भी दो रणनीतिक क्षेत्रों में प्रभुत्व का प्रयोग करना है। सबसे पहले, हम उत्पत्ति 1:28 पर आधारित एक सांस्कृतिक आदेश के अधीन हैं। उत्पत्ति 1:28। परिवार, चर्च, मानव सरकार, व्यवसाय, कृषि, शिक्षा ऐसे मार्ग हैं जिनके माध्यम से मसीह की महिमा व्यक्त की जाती है। इन सभी क्षेत्रों में उसकी महिमा का अनुसरण करना हमारा कार्य है।

2 कुरिन्थियों 10:5 में पौलुस लिखते हैं, "हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, नाश करते हैं। और हर एक भावना को बंदी बनाकर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

केनेथ मायर्स लिखते हैं कि मनुष्य सांस्कृतिक आदेश के लिए उपयुक्त था। अपने निर्माता ईश्वर की छवि के वाहक के रूप में, वह सांस्कृतिक गतिविधि से अलग संतुष्ट नहीं हो सकता था। यहीं पर मानव संस्कृति की उत्पत्ति बेदाग महिमा और संभावना में है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जो लोग ईश्वर के उद्धार को मानव संस्कृति के परिवर्तन के रूप में देखते हैं, वे इसे पुनः सृजन के रूप में बोलते हैं। केनेथ मायर्स, ईश्वर की सभी संतानें, और नीले साबर के जूते। सांस्कृतिक आदेश एक खाली अपील है, बिना उस अन्य महत्वपूर्ण कार्य के जो हमें छवि वाहक के रूप में करना है।

संस्कृति को बदलने की शुरुआत पापियों के हृदय को बदलने से होती है। मसीह के सुसमाचार में वह नवीकरण करने वाली शक्ति है। हालाँकि प्राथमिकता महान आदेश पर टिकी है, लेकिन सभी सृष्टि के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी स्पष्ट है।

वाह! पाप परमेश्वर के क्रोध को आमंत्रित करता है। रोमियों 1:18 खुले तौर पर घोषणा करता है, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उन लोगों की सारी अभक्ति और अधर्म के विरुद्ध स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं।

उद्धरण बंद करें। परमेश्वर का क्रोध उसकी पवित्रता या नैतिक शुद्धता की अभिव्यक्ति है। इसलिए, उसका क्रोध बस उसका सहज पवित्र आक्रोश है और पाप के प्रति उसकी पवित्रता का स्थिर विरोध है, जो, क्योंकि वह धर्मी है, न्यायिक दंड में खुद को व्यक्त करता है।

रॉबर्ट रेमंड की *ए न्यू सिस्टमैटिक थियोलॉजी*, 1998. मार्टिन लूथर ने लिखा, ईश्वर के क्रोध का स्रोत यह तथ्य है कि मनुष्य अपने जीवन और व्यवहार में पूरी तरह से ईश्वरविहीन और अधर्मी हैं। और यही बात ईश्वर के क्रोध को नीचे लाती है।

मनुष्य परमेश्वर को नहीं जानता और उसका तिरस्कार करता है। यह सभी बुराइयों का स्रोत है, पाप को जन्म देने वाली खटास, अधर्म का अथाह गड्ढा, हम यह भी कह सकते हैं। जहाँ परमेश्वर को नहीं जाना जाता और तिरस्कार किया जाता है, वहाँ कौन सी बुराइयाँ मौजूद होंगी? जिस तरह सभी पापों में नकारात्मक, निष्क्रिय और सकारात्मक सक्रिय पहलू होते हैं, उसी तरह यह परमेश्वर से नकारात्मक और सकारात्मक प्रतिक्रिया को आमंत्रित करता है।

मत्ती 25:41 में यीशु खोए हुओं के अंतिम न्याय का वर्णन करते हैं। “फिर वह अपने बाएँ हाथ वालों से भी कहेगा, हे शापित लोगो, मेरे पास से चले जाओ, उस अनन्त आग में जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है।”

नकारात्मक तत्व यह है कि पापी से परमेश्वर के सभी अनुग्रह और उपस्थिति हमेशा के लिए दूर हो जाती है। मुझे हमेशा के लिए उसकी धन्य, अनुग्रहपूर्ण उपस्थिति जोड़नी चाहिए। यीशु ने कहा, मुझसे दूर हो जाओ।

यह परम अभाव है, अच्छे और धन्य लोगों की परम वापसी। पापी ईश्वर की अनुपस्थिति की इच्छा के साथ जीते रहे हैं, और अब उन्हें यह मिल गया है। मिलर एरिक्सन ईश्वर और पापी के बीच आदान-प्रदान को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं।

"पाप वह है जो मनुष्य जीवन भर ईश्वर से कहता रहता है: चले जाओ, मुझे अकेला छोड़ दो। नरक ईश्वर का मनुष्य से अंतिम कहना है, तुम अपनी इच्छा पूरी कर सकते हो। यह ईश्वर का मनुष्य को उसके हाल पर छोड़ देना है, जैसा कि मनुष्य ने चुना है।"

नज़दीकी उद्धरण। मिलार्ड एरिक्सन, क्या नरक हमेशा के लिए है? बिब सैक, 1995. 259 और उसके बाद।

क्रिस्टोफर मॉर्गन और रॉबर्ट पीटरसन, संपादक, *हेल अंडर फायर, मॉडर्न स्कॉलरशिप रीइनवेंट्स इटरनल पनिशमेंट*, ज़ोंडरवन, 2004, को भी देखें, जिसके लिए हमें बुक ऑफ़ द ईयर के लिए नामांकित किया गया था। मैं जीत नहीं पाया, लेकिन यह एक अच्छा नामांकन था, मुझे कहना होगा। दूसरी प्रतिक्रिया सजा का सकारात्मक आरोपण है।

यीशु ने कहा, "अनन्त आग में जाओ।" मानव जाति खुलेआम विद्रोह करती है और परमेश्वर की नैतिक इच्छा का उल्लंघन करती है। परिणामस्वरूप, प्रभु परमेश्वर दण्ड की व्यवस्था करता है।

प्रकाशितवाक्य 20:11 से 15 में मानवजाति के अंतिम न्याय का दृश्य, उसी दृश्य को चित्रित करता है। सिंहासन पर बैठा न्यायाधीश, उसके सामने खड़ा न्यायाधीश, और आग की झील में न्याय। उन्हें उसकी उपस्थिति से दूर कर दिया जाता है और आग की झील में हमेशा के लिए दंडित किया जाता है।

मसीह का क्रूस परमेश्वर की उपस्थिति को वापस लेने और पापियों को दण्ड देने की निश्चितता प्रदान करता है। यदि उसने अपने बेटे को नहीं छोड़ा, तो क्या वह उन लोगों को छोड़ देगा जो उससे घृणा करते हैं? पाप के प्रति पवित्र परमेश्वर की एकमात्र प्रतिक्रिया न्याय है। वेनिंग ने कहा, उद्धरण, दुष्टता का वह नरक क्या है जिसे केवल परमेश्वर ही प्रायश्चित और शुद्ध कर सकता है? दुष्टता का वह नरक क्या है जिसे केवल परमेश्वर ही प्रायश्चित और शुद्ध कर सकता है? पाप धोखेबाज है।

पाप चालाक है। यह किसी बदसूरत प्राणी का भेष धारण करके नहीं आता और कहता है, मैं पाप हूँ, मैं तुम्हें पकड़ लूँगा। नहीं, यह एक सुंदर प्राणी का भेष धारण करके आता है और हमें धोखा देने की कोशिश करता है।

मत्ती 7 में हम यीशु को हास्य का प्रयोग करते हुए देखते हैं। कभी-कभी, आप पाखंड की निंदा करते हुए या तो हँसते हैं या रोते हैं।

मत्ती 7, तीन से पाँच। तू अपने भाई की आँख का तिनका क्यों देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा तुझे क्यों नहीं सूझता? या तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, कि मैं तेरी आँख का तिनका

निकाल दूँ, जबकि तेरी ही आँख में लट्ठा है? हे कपटी। पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका निकालने के लिए भली-भाँति देख सकेगा।

यह एक मज़ेदार तस्वीर है क्योंकि क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं जिसकी आँख में लट्ठा है? वह जहाँ भी मुड़ता है, वह दूसरे लोगों को धक्का दे रहा होता है। यह बेतुका है। आप अपनी आँख में लट्ठा कैसे नहीं देख सकते? और फिर भी हम वही करते हैं जिसकी ओर यह रूपक इशारा करता है।

हम दूसरों में, चाहे वे छोटे ही क्यों न हों, कमियाँ ढूँढ़ने में बहुत जल्दी करते हैं, और खुद में बड़ी कमियाँ नज़रअंदाज़ कर देते हैं। क्या यह ज़रूरी है कि यह वही गलती हो? मैं कहूँगा कि ऐसा बिल्कुल नहीं है। लेकिन कभी-कभी, यह भी सच होता है।

नहीं, यीशु कहते हैं, अपने पाप को स्वीकार करो, उससे निपटो, और फिर भाई या बहन की मदद करने की कोशिश करो। इब्रानियों 3:12 से 14 में यह साफ-साफ कहा गया है। या दिखाया गया है कि पाप कितना छलपूर्ण है।

बेशक, यह सब मानवीकरण है, लेकिन यह शक्तिशाली मानवीकरण भी है। इब्रानियों 3. संदर्भ में, इब्रानियों का लेखक जंगल में इस्राएलियों की पापपूर्ण अवज्ञा और अविश्वास की निंदा कर रहा है। भाइयों, सावधान रहो।

इब्रानियों 3:12. ऐसा न हो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन हो जो तुम्हें जीवते परमेश्वर से दूर ले जाए। पर जब तक आज का दिन कहा जाता है, तब तक हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो।

यह पुराने नियम से एक उद्धरण है। भजन संहिता 95 से।

यह सही है। भजन 95:7 से 11. आज इस शब्द का प्रयोग।

जब तक आज का दिन है, तब तक हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ताकि तुममें से कोई भी पाप के छल से कठोर न हो जाए। इस बारे में कोई गलती न करें। पाप हमें पकड़ने के लिए तत्पर है।

यह हमें फँसाना चाहता है। यह हमें प्रभु से दूर ले जाना चाहता है। बाइबल कॉलेज में, हमारे पास अलग-अलग प्रचारक आते थे, और यह काफी विविधतापूर्ण समूह था।

और यह व्यक्ति, जिसका मैं उद्धरण देने जा रहा हूँ, कोई महान व्याख्याता या महान धर्मशास्त्री नहीं था - वह एक साधारण आम आदमी था जो अपने वचन में प्रभु से प्रेम करता था। इसलिए, मैं उसे किसी भी तरह से तुच्छ नहीं समझता।

और शायद उन सभी लोगों में से जो उससे ज़्यादा समझदार थे, मुझे उनके शब्द याद नहीं हैं। लेकिन मैं उनके शब्दों को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा हूँ। या तो वह कहते हैं, यह

किताब, बाइबल का हवाला देते हुए, तुम्हें पाप से दूर रखेगी, या पाप तुम्हें इस किताब से दूर रखेगा।

वह आदमी अभी मेडलिन गया था, है न? वाह। हमें दूसरे ईसाइयों के साथ जवाबदेही की ज़रूरत है। शायद किसी निजी दोस्त या परिवार के सदस्य के साथ।

हम एक दूसरे को प्रोत्साहित कर सकते हैं और एक दूसरे को प्रतिदिन चेतावनी दे सकते हैं ताकि हम में से कोई भी, इब्रानियों के लेखक, अपने पाठकों में से हर एक में रुचि न लें जब वह धर्मत्याग की संभावना के खिलाफ लिखता है। यह इस पुस्तक में एक विषय है, जिसमें यहाँ भी शामिल है, कि आप में से कोई भी पाप के धोखे से कठोर न हो। मैं पुराने नियम की उपेक्षा नहीं करना चाहता।

और यिर्मयाह के पास इस संबंध में एक प्रसिद्ध वचन है। यिर्मयाह 17:9. हृदय सब वस्तुओं से अधिक धोखेबाज़ है और अत्यन्त रोगी है। इसलिए यह पाप के आकर्षक प्रलोभनों के प्रति बहुत कमज़ोर है।

इसे कौन समझ सकता है? मुझे नहीं पता कि अगली आयत अक्सर क्यों छोड़ दी जाती है। मैं, प्रभु, हृदय की खोज करता हूँ और मन को परखता हूँ। प्रभु समझते हैं।

प्रभु जानता है। और जो उसके अपने हैं, उन्हें उसने अपनी आत्मा दी है। और मसीह में इस जीवन में पाप रहित होना संभव नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से जीतना संभव है।

हम एक ब्रेक के बाद वापस आएंगे, भगवान की इच्छा से, और अपने अगले व्याख्यान में, परमेश्वर के वचन से पाप के इस वर्णन को समाप्त करेंगे, जबकि हम हमार्टियोलॉजी के सिद्धांत का परिचय देना जारी रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 11 है, पाप का बाइबिल वर्णन जारी है।